IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

किराना घराना–प्रमुख गायक एवं गायकी की विशेषताएं

Sudhakar Bandu Manwar
Reg. No.-28719039
Research Scholar
Department of Music
Shri JJTU University
Vidyanagari, Jhunjhunu
Rajastan 333010

Dr Ranjana Saxena
Reg No.- JJT/2K9SSH/1852
Associate Professor
HOD Department of Music
Shri JJT University
Vidyanagari, Jhunjhunu
Rajasthan 333010

सार :

किराना घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत की गायन परम्परा का एक प्रसिद्ध घराना है। इस घराने के प्रतिनिधि गायक अब्दुल करीम खाँ थे। अब्दुल करीम खाँ व वहीद खाँ को इस घराने का संस्थापक कहा जाता है। किराना घराने का नामकरण उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के एक तहसील कस्बा किराना से हुआ है। यह स्थान उस्ताद अब्दुल करीम खाँ का जन्म स्थल है। किराना घराने के संस्थापक उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब का निवास स्थान उत्तर प्रदेश में कैराना नामक ग्राम होने के कारण उनका घराना, किराना घराना कहलाया। इस घराने के मूल पुरुष सुप्रसिद्ध बीनकार बन्दे अली खाँ साहब को माना जाता है। ये गुलाम तकी नामक किराना के एक प्रसिद्ध बीनकार के पोते थे। इनकी शिष्य परम्परा के पश्चात् ही अब्दुल करीम खाँ साहब हुए। वास्तविकता यह मानी जाती है कि यह घराना सारंगी वादकों का था, जिसमें पहले सारंगी का अभ्यास अधिक हुआ तत्पश्चात् गायन अंगीकार किया गया, इसी कारण अब्दुल करीम खाँ व वहीद खाँ को इस घराने का संस्थापक कहा जाता है। अब्दुल करीम खाँ साहब ने संगीत की तालीम अपने वालिद काले खाँ और चाचा अब्दुल्ला खाँ से पाई थी। अब्दुल करीम खाँ के गुरु अब्दुल रहमान खाँ इसी घराने की शिष्य परम्परा में थे। इस घराने के प्रमुख कलाकारों की सूची में कई महान् व बड़े बड़े धुरन्धरों के नाम शामिल किए गए, जिनके तेज प्रभाव व स्वर उच्चारण के वैचित्र्य ने किराना घराने को अग्रसर करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस शोध मे किराना घराने के प्रमुख गायक एवं गायकी की विशेषताओं का अध्ययन इस शोध पत्र मे किया गया है।

की वर्ड्स : किराना घराना, कलाकार, गायकी, बढंत, माधुर्यता

प्रस्तावना :

किराना उत्तर प्रदेश के श्यामोली जिले का एक छोटा सा कस्बा है। मुगल शासन के दौरान, गताही नामक स्थान पर कई संगीतकारों का निवास था जो गोपाल नायक के शिष्य थे। जब यमुना नदी में भारी बाढ़ से गाठी गांव बह गया, तो मुगल सम्राट जहांगीर ने किराना नगर में निवासियों को फिर से बसाया। इस प्रकार कई संगीत परिवार किराना चले गए और वहां लंबे समय तक रहे। वे मुख्य रूप से संगीत वाद्ययंत्र और गायन में कुशल थे। मुगल

काल के दौरान किराना शहर संगीत के केंद्रों में से एक बन गया। उनकी आजीविका सारंगी प्रधान थी। अब्दुल करीम खान ने अपने प्रारंभिक जीवन में सारंगी प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

किराना घराने के संगीतकारों ने 16वीं सदी के नायक धोन और नायक वल्लु से अपने संबंध का पता लगाया, जो प्रसिद्ध गायक गोपाल नायक या नायक गोपाल के शिष्य थे। नायक धोनू और नायक वल्लू दोनों ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के दरबारी गायक थे। बीन, धृपद, ख्याल, सारंगी आदि यहाँ प्रचलन में थे। अठरहवी शताब्दी के मध्य में मुहम्मद शाह रंगीले के एक सभा गायक किराना घराने के हुसैन अली (हिंगारंग), और गुलाम मौला को किराना घराने के सर्वश्रेष्ठ बंदिश संगीतकार के रूप में भी जाना जाता है। इस शैली को अब्दुल करीम खान और अब्दुल वहीद खान के गायकों ने लोकप्रिय बनाया। ख्याल, ठुमरी, भजन आदि अब्दुल करीम खान ने नवीनताएँ जोड़ीं। उन्होंने प्रशंसा और आलोचना के बीच कड़ी मेहनत की। अब्दुल करीम खान साहब की प्रमुख गायकों की अनूठी धुनों, मधुरता, शालीनता, सूक्ष्म मोड़, क्रोध और कैद के रस में लथपथ उनकी भावपूर्ण गायन शैली के माध्यम से श्रोताओं के दिलों पर सही ढंग से कब्जा कर लिया।

किराना घराने के विकास में अब्दुल वाहिद खान के योगदान स्वीकार किया जाता है। अब्दुल वाहिद खान थोड़े आत्मकेंद्रित और रूढ़िवादी थे, लेकिन उन्होंने एक कुशल गुरु के रूप में बड़ी संख्या में उल्लेखनीय शिष्यों का गठन किया। फिर भी उन्हें अब्दुल करीम खान की तुलना में उनके आत्म–अवशोषित स्वभाव और अलौकिक में थोड़ा अपव्यय के कारण कम प्रचार मिला है। अब्दुल करीम खान और अब्दुल वहीद खान द्वारा किराना शैली की स्थापना ने अन्य शैलियों की कुछ प्रसिद्ध संगीत प्रतिभाओं को भी आकर्षित किया है। किराना घराने के प्रमुख कलाकार एवं गायकी की प्रमुख विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रविधी :

प्रस्तुत शोध हेतू वर्णनात्मक शोध प्रविधी का उपयोग किया गया है। इसमे किराना घराने के प्रमुख कलाकार एवं गायकी की विशेषताओं के संदर्भ मे प्रकाशित विविध साहित्य का अध्ययन करके उसमें से कुछ प्रमुख कलाकारों एवं इस घराने की चुनिंदा विशेषताओं का विश्लेषण इस घराने की प्रारंम्भिक गायकी के तत्त्वों के आधार पर किया गया है।

किराना घराने के प्रमुख गायक :

बंदे अली खां :

किराना घराने के इतिहास में बंदे अली खां (1826–1895 ई.) का नाम मिलता है। बंदे अली खान भारत के प्रसिद्ध चित्रकार थे। वह गुलाम जफर खान के पुत्र थे, जिनके पिता खलीफा मुहम्मद जाना खान थे, जो एक प्रसिद्ध शास्त्रीय और संगीत विद्वान और खलीफा रामजानी (बरनवा शरीफ, शाहरनपुर) के शिष्य थे। बंदे अली खां को उनके मामा बहराम खान द्वारा वीणा और गायन में प्रशिक्षित किया गया था। अपने चाचा गुलाम मौला खान से संगीत की शिक्षा भी प्राप्त थी। बंदे अली खा ने जयपुर में और बाद में ग्वालियर में एक दरबारी संगीतकार के रूप में काम किया।

काले खां :

काले खा के पिता मजीद खान एक प्रतिभाशाली संगीतकार थे। काले खाँ ने उस्ताद हद्दू खाँ और हस्सु खाँ के छोटे भाई अब्दुल मोसिद की पुत्री से विवाह किया। उन्होंने अपने बेटों को बचपन से ही सारंगी और गायन का प्रशिक्षण दिया। वह कुछ समय तक भरतपुर के शाही दरबार से जुड़े रहे। वह दरभंगा शाही दरबार से भी जुड़े थे।

अब्दुल करीम खां

अब्दुल करीम खा किराना शैली के प्रमुख कलाकार हैं। अब्दुल करीम खान, अपने प्रारंभिक जीवन में, सारंगी सहित विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों में भी कुशल थे। सारंगी को उन्होंने अपने परिवार से सीखा। बाद में, जब उन्होंने बंदे अली खान को वीणा का अध्ययन करने की इच्छा व्यक्त की, तो कहा जाता है कि बंदे अली खान ने उन्हें मुखर संगीत पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश देकर उन्हें इस क्षेत्र में प्रोत्साहित किया। इसके बाद अब्दुल करीम खान की मार्ग संगीत में शानदार मिसाल जगजाहिर है। अब्दुल करीम खान की सुरीली आवाज इतनी मधुर है कि यह तानपुरा के साथ एक हो जाती है। वे बिनकरों की गौहर बानी से प्रेरित संगीत शैली के अनुयायी थे। वह किसी भी सप्तक में किसी भी यंत्र के बिना किसी भी क्षण श्रुति कर सकते थे। उनके गीतों में गमक मुख्य स्वरों का उपयोग होता है, जो बिनकरों के बीच दृढ़ता से मनाया जाता है। ख्याल के अलावा वे भजन, ठुमरी, रंगमंच संगीत आदि में भी पारंगत थे। अब्दुल करीम खान के पसंदीदा राग थे–ललित, मारवा, मलकंस, तोडी, दरबारी कानाडा आदि।

अब्दुल वाहिद खान

नजीरों बेगम और अब्दुल मजीद खान (1825–1912 ई.) के पुत्र अब्दुल वाहिद खान का जन्म 1886 ई. में हुआ था। उन्होंने ख्याल के अतिदेय लयबद्ध विस्तार, बरहट और विस्तृत करण का सटीक अनुवर्ती और अन्य गायक के हिस्सों को मिलाकर पेश किया। अब्दुल वाहिद खान झुमरा ताल ख्याल गाते थे जो दुर्लभ था, आमिर खान ने बहुत धीमी ताल या लय ख्याल को एक नए तरीके से लोकप्रिय बनाया।

अब्दुल गनी खान

इतिहास के पन्नों से लगभग भुला दिए जाने वाले उस्ताद अब्दुल गनी खान किराना घराने के मालिक हैं। अब्दुल गनी खान स्वतंत्रता पूर्व काल के दौरान द्वारभंगा शाही दरबार में एक कक्ष संगीतकार के रूप में बैठे थे। किराना शैली के पद्मश्री पुरस्कार विजेता ख्याल गायक पंडित चन्नूलाल मिश्रा ने नौ साल की उम्र से नौ साल तक गनी खां से लगातार प्रशिक्षण प्राप्त किया। विशेष रूप से द्वारभंगा क्षेत्र में किराना घराने के प्रसार में अब्दुल गनी खाँ की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं।

रजब अली खान

किराना घराने के मास्टर रजब अली खान (1874–1959 ई.) का जन्म मध्य प्रदेश के नरसिंगर में हुआ था। उन्होंने अपने चाचा हैदर बक्श के पास कई रीति–रिवाजों और तकनीकों को विस्तार से सीखा। रजब अली खान ने बाद में बीच की पिच, बहलवा में बंदिश का प्रदर्शन किया, फिर ताने पहुंचे और विस्तार न करते हुए बढ़ती पिच में संगीत का प्रदर्शन किया। वे इंदौर में एक दरबारी गायक थे।

सवाई गंधर्व

सवाई गंधर्व का जन्म 1886 में कुंडगोल में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उनको महफिल के राजा के रूप में सही मायने में प्रशंसित किया गया था। व्यापकता की भावना या गरिमा की गुणवत्ता जिसने उनके संगीत को चिह्नित किया। उन्होंने ज्यादातर केवल वही राग प्रस्तुत किए जो उनके दर्शकों के लिए सरल और परिचित थे। उनके अस्थयी पाठों में एक चुने हुए राग की एक इत्मीनान से गति और सूक्ष्म अन्वेषण का पता चला। शांत, अनछुई प्रगति, विभिन्न प्रकार के संक्षिप्त द्वारा विरामित, नरम स्वर–आलाप, ने सूक्ष्म और सुंदर भावना को दिखाया। 1907 मे सवाई गंधर्व मराठी ड्रामा सोसाइटी में शामिल हो गए। वह एक सफल नाटककार थे और अपने अद्भुत सुकांत नाट्य संगीत में लोकप्रिय हुए। उन्हें किराना के अलावा अन्य विधाओं का भी उत्कृष्ट ज्ञान था। उनके 20 रिकॉर्ड जारी किए गए जिनमें भैरवी, शंकर, सुहा कानडा, तिलंग, मल्लार, हिंडोल आदि राग थे। मराठी मंच पर उनका

बेदाग संगीत और नाटकीय प्रदर्शन आज भी कई संगीत कलाकारों के लिए प्रेरणा है। सवाई गंधर्व में अब्दुल करीम का खूबसूरत अंदाज देखने को मिला। उन्होंने राग की भावना को व्यक्त करने और भक्ति के आत्म–अवशोषण की अपनी त्रुटिहीन तकनीक के साथ इस शैली को प्रभावी ढंग से विकसित किया, जिसे दर्शकों ने सराहा है। प्रसिद्ध योगीया राग पिया मिलन की आस में उनका गायन अब्दुल करीम की याद दिलाता है।

गंगूबाई हंगल

1913 ई. में चिक्कुराव और अंबाबाई की बेटी गंगूबाई हंगल का जन्म धारवाड़ में हुआ था। ग्रामोफोन रिकॉर्ड की दुकानों में बजने वाले संगीत को सुनकर अत्यधिक प्रतिभाशाली गंगूबाई हिंदुस्तानी संगीत की ओर आकर्षित हुईं। 1945 ई.सा. के बीच, गंगूबाई ने पूरे भारत में विभिन्न स्थानों पर और आकाशवाणी पर संगीत का प्रदर्शन किया। वह हल्के शास्त्रीय संगीत जैसे भजन, ठुमरी आदि में पारंगत हैं, लेकिन संगीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनके जीवनकाल में लगभग 50 रिकॉर्डिंग हैं, जिनमें गजल, मराठी–भाव संगीत, शास्त्रीय संगीत और कुछ युगल शामिल हैं। गंगूबाई हंगल ने अपने पूरे जीवन में कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए है।

भीमसेन जोशी

भीमसेन जोशी का जन्म 1922 में कर्नाटक के गदग में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने कई संगीत समारोहों में भाग लिया और दर्शकों की सराहना हासिल की। संभवतः 1950 के बाद, भीमसेन जोशी ने किराना शैली में अन्य शैलियों से कुछ अलंकरणों को लागू करके नवीनता के स्पर्श के साथ किराना घराने को बाहर लाया। उनकी आवाज जयपुर की केशरबाई केरकर और उस्ताद आमिर खान की आवाज से मिलती जुलती थी। वह ग्वालियर घराने के राग की शुद्धता अच्छाई के प्रति आकर्षित थे। उनके अभिनव किराना गायन को दर्शकों ने पसंद किया। उन्होंने पूरे भारत में ऑल इंडिया रेडियो पर कई गाने गाकर अपार प्रसिद्धि और भाग्य प्राप्त किया। उन्होंने मराठी रंगमंच संगीत, भजन आदि में भी सफलता प्राप्त की। उन्होंने ऑडिओ सीडी आदि पर भी व्यापक रूप से रिकॉर्ड किया है।उन्हें अपने जीवन में कई पुरस्कार मिले, जैसे भारत रत्न (2009) पद्मश्री, पद्म भूषण, पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, महाराष्ट्र भूषण आदि।

फैयाज अहमद खान और नियाज अहमद खान

फैयाज अहमद खान और नियाज अहमद खान, किराना शैली के प्रसिद्ध गायक थे। फैयाज अहमद खान और नियाज अहमद खान दोनों को उनके पिता बशीर अहमद ने प्रशिक्षित किया था। वे युगल गायक के रूप में प्रसिद्ध थे, उन्होंने पारंपरिक गीत और किराना शैली भी गाईं।

प्रभा अत्रे

1930 ई. प्रभा अत्रेजी का जन्म पुणे के एक संगीत परिवार में हुआ था। वह भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महिला कलाकार के रूप में अच्छी तरह से स्थापित हैं। न केवल भारतीय श्रोता और संगीत के पारखी, बल्कि विदेशी शास्त्रीय संगीत प्रेमी और संगीत प्रतिभाएँ भी उनके संगीत प्रदर्शन से प्रभावित हुए हैं। उन्होंने पाठ्यचर्या और सह–पाठ्यचर्या दोनों धाराओं में पढ़ाया है। उनके शिष्यों में सरला देसाई (बैंगलोर), पद्मिनी राव (बैंगलोर), अलका योगालेकर, आशा परासानी आदि उल्लेखनीय हैं।

किराना शैली की विशेषताएं

अब्दुल करीम खान की भावनात्मक संगीतमय तड़प और उनके गीतात्मक गुणों को किराना शैली की पहचान के रूप में उजागर किया गया है। इस शैली में उचित शुद्धता और स्वर की कोमलता के साथ नाजुक शिल्प कौशल पर अधिक जोर दिया जाता है। स्वरों का प्रयोग प्रवाह के साथ मिंड, कण, आदि का उपयोग किया जाता है। आलाप

मुख्य गायन है और प्रत्येक स्वर के क्रम में एक–एक करके आरोह के साथ गाया जाता है, स्वरों का एक विशेष उद्देश्य होता है। रागों की एक विस्तृत श्रृंखला और आलाप रागों की पसंद पर जोर दिया जाता है। जैसे ललित, मियां की तोडी, पुरिया, दरबारी, कल्याण, अभोगी कानडा आदि। विलंबित–विलंबित समर्पित दृष्टिकोण के साथ गीत की सुंदरता पर विशेष ध्यान दिया गया है माधुर्य का प्रदर्शन सारंगी और वीणा की बारीक धुन को स्वर देने का प्रयास किया जाता है। बंदिश को समृद्ध अपील के साथ चुना गया है। विलंबित और त्वरित स्थायी और अंतरा अक्सर पूरी तरह से नहीं परोसा जाता है। विलंबित ख्याल अपेक्षाकृत धीमी गति से गाया जाता है। ठुमरी अंग के छोटे ख्याल गाए जाते हैं और अपरम्परागत या संकीर्ण रागों का अधिक उपयोग नहीं किया जाता है, विभिन्न प्रकार के तान जैसे सपाट अलंकृत तन और स्वर्गम का उपयोग किया जाता है। राग का प्रदर्शन करते हुए, किराना घराने में राग के अनुसार चरण–दर–चरण राग, षड्ज, रिखब, गांधार, मध्यम, पंचम, निषाद, विस्तार से है। ठुमरी अंग में विशेष उत्कृष्टता ध्यान देने योग्य है। विशेष रूप से ख्यालांग ठुमरी का प्रदर्शन किया जाता है, जिसमें आत्म–बलिदान की इच्छा विशेष रूप से ध्यान देने योग्य होती है। स्वर की प्रधानता अधिकतम होती है। विभिन्न मधुर स्वरों के समुचित प्रयोग तथा स्वरों के विविध उपयोगों को विशेष महत्व दिया गया है। प्रमुख विशेषताओंका वर्णन निम्नवत है।

आवाज का लगाव :

किराना घराने में स्वरों में सुगमता दिखाई देती है। अब्दुल करीम खां ने, सुरीले गायन एवं सुरीलेपन और भावुकता पर विशेष जोर दिया। अब्दुल वहीद खां का ध्यान शास्त्रीय संगीत एवं घरानेदार गायकी पर था। किराना गायकी के कारण वह बहुत मशहूर थे। राग मारवा वह बहुत अच्छा गाते थे। जहां तक राग बिहाग का स्थाई 'रसिया जावो ना' का सम्बन्ध है उन्होंने इस राग का प्रचार किया। वास्तव में किराना घराना सारंगी वादकों का घराना है। अब्दुल करीम खां और वहीद खां के घरानों में सारंगी पहले बजाई गई, और गाना बाद में गाया गया। अतः कहा जाता है कि किराना घराने का ज्यादा सम्बन्ध सारंगी वादन से रहा है। किराना घराने में मौलिक गायकी की दृष्टि से प्रतिक्रिया की भावना है। अतः इसका ख्याल गायन सुनने से ऐसा प्रतीत होता है कि सारंगी वादक अपनी सारंगी पर किसी राग को सोंच सोंचकर प्रयोग कर रहा हो। इस गायन में राग विलम्बित लय में गायी जाती है, स्थाई अन्तरे के शब्दों को पूरा नही कहा जाता और न सुनाई ही देता है, शब्दों को मात्रा में बिठाकर दो या तीन शब्द ही कहे जाते है, इससे गायकी आसानीपूर्वक सम पर आ जाती है। कलात्मक ढंग या द्रुत तानें इसके गायकी मे नही मिलती। किराना गायकी स्वर–उच्चारण के विचित्रता पर ही अधिक जोर देता है और ताल लय के चमत्कार के प्रति उसमें एक तरह की उदासीनता सी होती है।

किराना घराने की बढंत :

उस्ताद अमीर खां की बढंत किराना गायकी की बढंत से मिलती जुलती थी। मेरखण्ड के सिध्दान्त के हिसाब से वह जिस तरह से अपने स्वरों को बढाते थे, उससे उनकी रचनात्मक क्षमता अथवा चयनशीलता का पता चलता था। किसी राग को विलम्बित बढंत में वह उन्ही स्वरों को विलक्षण उलट पुलट करते थे जिनसे उस राग की व्याख्या हो सकती थी, चाहे वह किसी रचना के पूरे शब्दों को न भी गाते हो परन्तु उनकी बढंत गायकी की दृष्टि से दोषरहित होती थी। किसी विशेष शब्दों के सहारे जब दो किसी राग का धीरे धीरे आलाप करते थे तो उसमें बडा इतमिनान होता था, बडे बढंत के लिए प्रसिध्द थे।

माधुर्यता :

खां साहब गौवरहारी बानी की गायकी गाते थे। कुछ लोगों का मत है कि ये बानीकरण व शौर्य रसों के लिए विशेष प्रसिध्द थी। इनकी आवाज में विलक्षण माधुर्य था तथा इनकी आवाज इतनी सुरीली थी कि तम्बूरे के तारों से वो एक जीव हो जाती थी। आवाज बनाने की खास पध्दति थी। खां साहब का गाना आलाप प्रधान था जैसे बीन अथवा सितार जैसे तुंतु वाद्यों पर उंगली से तार खींचकर एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते है और इस नाजुक खींच के कारण दोनो स्वरों के बीच की सास नही टूटती। खां साहब के आलाप इसी प्रकार के थे तथा उनकी सांस कभी भी टूटती नही थी। उनके आलापों में अखण्डता तथा किसी भी तरह बल खाते जाने पर भी न खटकने वाला एक प्रवाह ही प्रतीत होता था। इसके अतिरिक्त उनमें विलक्षण सुरीलापन होने के कारण खां साहब के गानों से श्रोता तल्लीन हो जाते थे। उनकी तान जोरदार व गमकयुक्त थी तथा प्रत्येक हरकत दानेदार सुन्दर व सुडौल थी। गायकी में जब भी रंग जाते तो एक एक राग घण्टे–डेढ घण्टे तक गाते थे। उनके आलापों मे एक विशिष्ट ढंग था और वह यह कि राग के अन्तर्गत कुछ महत्वपूर्ण स्वरों को बारी बारी से महत्व देकर उनके इर्द गिर्द स्वरों का जाल फैलाना। ऐसे आलापों के लिए उपयुक्त बडे राग ही वे पसन्द करते थे।

तालपक्ष व लयकारी :

प्राचीन समय से ही भारतीय संगीत में ताल परम्परा चली आ रही है। ताल के द्वारा लय को दर्शाया जाता है। सुरों के बीच के अंतराल को मापने के लिए ताल प्रयुक्त किया जाता है। लय एक नैसर्गिक प्रक्रिया है, जिसका विस्तार समस्त प्रकृति में सर्वत्र पाया जाता है। स्वयं मानव का जीवन श्वास–प्रश्वास की क्रिया पर निर्भर रहता है, उसमें यह लय स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। उसकी लय जरा सी बिगड जाने पर मनुष्य का जीवन खतरे में पड जाता है। हृदय की गति और नाडी का चलन इस लय तत्व का उत्कृष्ठ उदाहरण है। जिस नियमित गति से हृदय का स्पन्दन होता रहता है, वहीं नियमित गति लय का मुख्य लक्षण है। लय के जन्म के साथ ही उसको दर्शाने के लिए किसी क्रिया की आवश्यकता पडी और ताल का जन्म हुआ। लय को काल तथा क्रिया से नियंत्रित करने पर ताल का उद्भव होता है तथा लय स्वयं एक व्यापक एवं अखण्डित क्रिया है। इसको वांछित अंतराल में बांधकर क्रिया से दर्शाना ही ताल कहलाता है। ताली शब्द जो ताल से निकला है, लय को दर्शाने की क्रिया का सूचक है। यह क्रिया सशब्द अथवा निःशब्द रहती थी। सशब्द क्रिया में ताली जैसी हाथ पर आघात करने की क्रिया थी और निःशब्द में हाथ खाली फेंकने जैसी क्रिया थी। सामवेद के संगीत में हाथ की उगलियों पर स्वरों के अंतराल दर्शाए जाते थे। इसी का विकास आगे चलकर हाथ की विभिन्न क्रियाओं में हुआ, रामायण तथा महाभारत में ऐसे लोगों का उल्लेख मिलता है जो ताल दर्शाने तथा मात्रा गिनने के लिए नियुक्त होते थे। इन क्रियाओं के कारण गीत तथा गत की प्रत्येक मात्रा की गणना हो सकती थी और इसके माध्यम से गीतों की बन्दिश भी सुरक्षित रह सकती थी। भरत के नाटय् शास्त्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि ताल की प्रत्येक मात्रा के लिए सशब्द या निःशब्द में से कोई क्रिया अवश्य की जाती थी। यह परम्परा उत्तर तथा दक्षिण दोनों में किसी न किसी रुप मे आज भी सुरक्षित है। ध्रुपद, धमार तथा तराना गाते समय गायकों के व्दारा आज भी मात्राओं की गणना उंगलियों पर की जाती है, यह तथ्य सर्वविदित है। दक्षिण में ताल की प्रत्येक मात्रा को हाथ पर दिखाने की परम्परा आज भी सुरक्षित है।

निष्कर्ष :

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ द्वारा स्थापित इस घराने की विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि इस घराने के प्रमुख बीन वादक उस्ताद बन्दे अली खाँ के वादन में प्रमुख सौन्दर्य का इस घराने पर विशेष प्रभाव रहा। बीन वादक के सौन्दर्य तत्त्वों की कल्पना से प्रेरणा लेकर ख्याल गायिकी का आविष्कार करने वाले महान् कलाकार साहब करीम खाँ द्वारा इस घराने ने प्रतिष्ठा पाई। इस घराने की गायिकी हिन्दुस्तानी संगीत जगत में अपना विशेष स्थान रखती है। इस घराने की गायिकी आलाप प्रधान है। राग के कुछ महत्त्वपूर्ण स्वरों को व्यापक रूप से विस्तृत करके गायन करना इस घराने की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। यह घराना व इसकी गायिकी तन्त्र वीणा वादन के की वाद्यों पर आधारित है, इसलिए हर राग की बढ़त वीणा वादन के ढंग से, स्वरों की विभिन्न भावपूर्ण ढंग से बढ़त की जाती है। मूलतः बीनकारों का घराना होने के कारण विलम्बित लय, स्वर की दीर्घता, एक स्वर से दूसर स्वर तक जाते समय स्वर को मीन्ड की भांति टूटने न देना, सुरीलापन तथा भक्ति भाव युक्त आलापचारी इस गायिकी की प्रमुख विशेषताएँ हैं। तात्पर्य सुर का लगाव ही इस घराने की विशेषता है। ठुमरी गाने की प्रथा की विशेषता इस घराने में दृष्टिगोचर होती है। सरगम से राग का अत्यधिक विस्तार करना, इस घराने का विशेष गुण या पहचान बन गया है। इस घराने के संगीतज्ञों के अनुसार स्वर को गायिकी की आत्मा माना गया है। इसमें भाव की अपेक्षा बोल बाँट को अधिक महत्त्व दिया गया है।

सन्दर्भ :

- बोनी सी. व्ही, (1997). ख्याल रचनात्मकता उत्तर भारत की शास्त्रीय संगीत परंपरा के भीतर, नई दिल्ली : मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड.
- कुमार प्रसाद मुखोपाध्याय, कुदरत रंगिबिरंगी, कलकत्ता : आनंद पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड
- जयती नायर, (2018). त्रुटिहीन गायकी ने एक शानदार संगीत परंपरा स्थापित की, द हिन्दू। 1 फरवरी 2018।
- मुखर्जी, दिलीप कुमार (1977). भारतीय संगीत में शैलियों का इतिहास, कलकत्ता : ए. मुखर्जी एंण्ड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड
- अमल दशर्मा, (1995) प्राचीन और आधुनिक संगीतकार और शैलियों का इतिहास, कलकत्ता : दरबारी प्रकाशन
- अहरानी घोष (2005), शास्त्रीय संगीत और संस्थागत संगीत, कलकत्ता : मिरांडा पब्लिशर्स
- मनोरमा शर्मा, (2006), हिंदुस्तानी संगीत की परंपरा, नई दिल्ली : एपीएचआई प्रकाशन
- विनयचंद्र, (1978), जीवनी–अब्दुल करीम खान, मद्रास : श्री कृष्णानंद म्यूजिक सर्कल स्मरणिका
- सुशीला मिश्रा, (1981), हिंदुस्तानी संगीत के महान उस्ताद, नई दिल्ली : हेम पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड
- मिश्रा, (1970) हिंदुस्तानी संगीत के महान स्वामी, अब्दुल करीम संगीत अनुसंधान ब्यूरो, उस्ताद अब्दुल करीम खान, कलकत्ता : निखिल भरत अब्दुल करीमी संगीत सम्मेलन, तीसरा वार्षिक सत्र स्मारिका
- कुमारप्रसाद मुखोपाध्याय, (1914) मजलिस, कलकत्ता : आनंद पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड,